D-II P-IV

अज्ञेय (साहित्यिक परिचय) डा. सुजाता गुप्ता

चिंतन और अनुभव—दोनों अज्ञेय के काव्य में समानांतर चलते हैं। अज्ञेय के काव्य में एक गंभीर चिंतन प्रक्रिया चलती है। प्रकृति, मनुष्य और जीवन तीनों में एक अद्भुत सौन्दर्य होता है। कविमन यहीं आकर रुकता है। सृजनात्मकता कवि की प्राथमिकता रही है और उसका स्वभाव भी। व्यक्तित्व का परिसीमन कवि कभी नहीं स्वीकार करता है। कवि अपनी बौद्धिक निजता को बचाता है। विचारों की भव्यता अज्ञेय का अपना गुण है। अज्ञेय की कविताएँ एक गहरी रचनात्मक प्रक्रिया से जुड़ी हैं जिसमें संवेदना और दर्शन का अद्वैत है। अनुभूति इतनी सघन है, जिसे शब्दों में बाँधना सहज नहीं रहा है। उसे यथावत अभिव्यक्ति देने के लिए ही वे एक असाधारण काव्यभाषा का विकास करते हैं।

भाषा की एक गंध होती है और रचना की एक विशिष्ट प्रक्रिया। अज्ञेय के प्रवाह में कौशल एवं लाघव के कारण स्फीत एवं श्रद्धापूत प्रवाह है। अज्ञेय शब्द एवं कला के पारखी रहे हैं। अपनी गहन अनुभूतियों में सक्षम भी। यही सच्चे कलाकार की विलक्षणता है।

* 'साहित्य एवं व्यक्ति की स्वतंत्रता' के प्रतिनिधि कवि हैं अज्ञेय।

* एकरूपता की अस्वीकृति इनकी कविताओं की टेक है।

* व्यक्तिवादी कवि की अपेक्षा 'व्यक्तित्ववादी' कवि कहना अधिक श्रेयस्कर है।

आधुनिक साहित्य में मानवीय व्यक्तित्व और उसकी सृजनात्मकता की सबसे गहरी और संवेदनात्मक प्रभाव की ओर वे अधिक उन्मुख थे। एकरूपता की अस्वीकृति इनकी कविताओं की टेक थी।

अज्ञेय जहाँ अपने व्यक्तित्व को किसी दृश्य या विचार में तल्लीन कर लेते थे, वहाँ वे उत्कृष्ट काव्य रचते हैं।
"कविता का कथावस्तु का गौरव, उसकी भव्यता है उस रसायनिक क्रिया की तीव्रता में जिनके द्वारा विभिन्न भाव एक होते और चमत्कार उत्पन्न करते हैं।"

'अज्ञेय' की काव्य-यात्रा, जीवन की अर्थवत्ता को पाना और उसकी अभिव्यक्ति को पाठकों तक पहुँचाना है।

अज्ञेय का काव्य सत्य और अर्थ की खोज का काव्य है। उनकी काव्य-यात्रा का उद्देश्य जीवन की अर्थवत्ता की उपलब्धि रही है। टी. एस. इलियट का प्रभाव उनके विचार तथा काव्य-शिल्प दोनों पर ही दिखलाई देता है।

अनुभूति को काव्य अधिक प्रश्रय देते हुए अज्ञेय 'क्षणवादी' भी हैं। प्रकृति के उद्दीपन के रूपों की छवि, कहीं प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करता है, तो कहीं उस परम ब्रह्म के दर्शन को साक्षात करते हैं।

"बना दे चितेरे,
मेरे लिए एक चित्र बना दे।
पहले सागर आँक:
हाँ पहले आँक:
सागर आँक कर फिर आँक उछली हुई मछली:
ऊपर अधर में
जहाँ ऊपर भी अगाध नीलिमा है
उछली हुई मछली
जिसकी मरोड़ी हुई देहवल्ली में
उसकी जिजीविषा की उत्कट आतुरता मुखर है।"

— 'बना दे चितेरे' (अज्ञेय)